# ६. नदी और दरिया

– दुष्यंतकुमार

**संभाषणीय**

**विद्यालय के काव्यपाठ कार्यक्रम में सहभागी होकर कविता प्रस्तुत कीजिए :–**

**कृति के लिए आवश्यक सोपान :**

• काव्यपाठ का आयोजन करवाएँ । • विषय निर्धारित करें । • विद्यार्थियों को निश्चित विषय पर काव्यपाठ प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करें ।

इस नदी की धार से ठंडी हवा आती तो है,
नाव जर्जर ही सही, लहरों से टकराती तो है ।

एक चिंगारी कहीं से ढूँढ़ लाओ दोस्तो,
इस दिये में तेल से भीगी हुई बाती तो है ।

एक खंडहर के हृदय-सी एक जंगली फूल-सी,
आदमी की पीर गूँगी ही सही गाती तो है ।

एक चादर साँझ ने सारे नगर पर डाल दी,
यह अँधेरे की सड़क उस भोर तक जाती तो है ।

निर्वसन मैदान में लेटी हुई है जो नदी,
पत्थरों से ओट में जा-जा के बतियाती तो है ।

दुख नहीं कोई कि अब उपलब्धियों के नाम पर,
और कुछ हो या न हो आकाश-सी छाती तो है ।

× × ×

आज सड़कों पर लिखे हैं सैकड़ों नारे न देख,
पर अँधेरे देख तू आकाश के तारे न देख ।

एक दरिया है यहाँ पर दूर तक फैला हुआ,
आज अपने बाजुओं को देख पतवारें न देख ।

अब यकीनन ठोस है धरती हकीकत की तरह,
यह हकीकत देख लेकिन खौफ के मारे न देख ।

वे सहारे भी नहीं अब जंग लड़नी है तुझे,
कट चुके जो हाथ उन हाथों में तलवारें न देख ।

ये धुंधलका है नजर का तू महज मायूस है,
रोजनों को देख दीवारों में दीवारें न देख ।

राख कितनी राख है, चारों तरफ बिखरी हुई,
राख में चिनगारियाँ ही देख अंगारे न देख ।

—०—

## परिचय

**जन्म :** १ सितंबर १९३३ राजपुर, विजनौर (उ.प्र.)

**मृत्यु :** ३० दिसंबर १९७५ भोपाल (म.प्र.)

**परिचय :** दुष्यंतकुमार जी हिंदी साहित्य के लोकप्रिय, कालजयी हस्ताक्षर हैं । गजल विधा को हिंदी में लोकप्रिय बनाने में आपका बहुत बड़ा योगदान है। आपने कविता, गीत, गजल, काव्य नाटक, उपन्यास आदि सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। आपकी गजलों ने आपको लोकप्रियता की बुलंदी पर पहुँचा दिया है।

**प्रमुख कृतियाँ :** एक कंठ विषपायी (काव्य नाटक) और मसीहा मर गया (नाटक) छोटे-छोटे सवाल, आँगन में एक वृक्ष, दुहरी जिंदगी आदि (उपन्यास), साये में धूप (गजल संग्रह) सूर्य का स्वागत, आवाजों के घेरे, जलते हुए वन का वसंत (कविता संग्रह) ।

## पद्य संबंधी

**गजल :** गजल एक ही बहर और वजन के अनुसार लिखे गए शेरों का समूह है । इसके पहले शेर को मतला और अंतिम शेर जिसमें शायर का नाम हो उस को मकता कहते हैं ।

इन गजलों में दुष्यंत कुमार जी ने साहस, अधिकारों के प्रति सजग रहने, स्वाभिमान बनाए रखने, खुद पर भरोसा करने के लिए प्रेरित किया है ।

## शब्द संसार

**खंडहर** (पुं.सं.) = भग्नावशेष
**पीर** (स्त्री.सं.) = पीड़ा, दुख
**भोर** (पुं.सं.) = प्रभात
**पतवार** (स्त्री.सं.) = नाव चलाने का साधन

## लेखनीय

गजल में आए किसी भाव, विचार का अपने शब्दों में लेखन कीजिए ।

## श्रवणीय

किसी सार्वजनिक कार्यक्रम के मंचसंचालन को आनंदपूर्वक रसास्वादन करते हुए सुनिए ।

## पठनीय

पुरस्कार प्राप्त किसी साहित्यकार की जानकारी का वाचन कीजिए ।

## कल्पना पल्लवन

'दूसरों के मतों/विचारों का आदर करने में हमारा सम्मान है' इसे उदाहरणों द्वारा स्पष्ट कीजिए ।

## आसपास

अपने परिवेश में आयोजित किसी कवि सम्मेलन में सहभागी होकर आनंद लीजिए ।

## पाठ के आँगन में

**(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(क) आकृति :

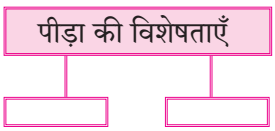


(ख) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

| (अ) | (ब) |
|---|---|
| निर्वसन | सड़क |
| दिया | जर्जर |
| नाव | बाती |
| अँधेरा | मैदान |

## पाठ से आगे

प्रसिद्ध गजलकार सुरेश भट जी की गजलें सुनिए तथा स्वयं के संदर्भ के लिए पुनःस्मरण करके टिप्पणी बनाइए ।

**(२) 'हर अंधेरी रात के बाद नई सुबह होती है', इस विषय पर अपने विचार लिखिए ।**

## रचना बोध

.....

.....

.....